B.A I Hons I Paper

अर्धमागधी प्राकृत भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डालें। (4)

साधारणत: अर्धमागधी शब्द की व्युत्पत्ति "अर्धमागध्या" अर्थात जिसका अर्धांश मागधी कहा जाता है अर्धमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध और शूरसेन (मथुरा) का मध्यवर्ती प्रदेश अयोध्या है तीर्थंकरों के उपदेश की भाषा अर्धमागधी ही मानी गई है आदि तीर्थंकर ऋषभ देव अयोध्या के निवासी थे, अत: अयोध्या से ही इस भाषा की उत्पत्ति मानी जा सकती है प्रदेश की दृष्टि से अधिकांश विचारक इसे काशी - कोशल प्रदेश की भाषा मानते है

चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर अर्धमागधी में उपदेश देते थे इनका जन्म स्थान वैशाली में हुआ था। भगवान महावीर के विहार एवं प्रचार का मुख्य क्षेत्र पूरब में लाढ़ भूमि से लेकर पश्चिम में मगध की सीमा तक उत्तर में वैशाली से लेकर दक्षिण में राजगृह और मगध के दक्षिण किनारे तक था। अत: अर्धमागधी इसी क्षेत्र की भाषा रही होगी। यह भी ज्ञातव्य है कि इन क्षेत्रों में बोली जानेवाली अन्य बोलियों का प्रभाव भी अवश्य पड़ा होगा। अर्धमागधी के अतिरिक्त इस क्षेत्र में मुण्डा भाषा भी प्रचलित थी। अत: मुण्डा भाषा का प्रभाव भी अर्धमागधी पर अवश्य वर्तमान है

भगवान महावीर अर्धमागधी भाषा में धर्मोपदेश देते थे, यह शांति, आनन्द और सुखदायिनी भाषा आर्य, अनार्य, द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु पंक्षी के लिए उनकी अपनी - अपनी बोली में परिणत हो जाती थी। अर्धमागधी को बहुविभाजित भाषा कहा गया है वैदिक भाषा के समान इसे भी प्राचीन भाषा माना जाता है।

विद्वानों का मानना है कि अर्धमागधी का रूप गठन मागधी और शौरसेनी से हुआ है हार्नले ने समस्त प्राकृत बोलियों को दो वर्गों में बाँटा है एक वर्ग को उसने शौरसेनी प्राकृत बोली और दूसरे वर्ग को मागधी प्राकृत बोली कहा है इन बोलियों के क्षेत्रों के बीचों - बीच में उसने एक प्रकार की एक रेखा खींची और उक्त रेखा के पास आते - जाते मे दोनों प्राकृतें आपस में मिल गयी और इसका परिणाम यह हुआ कि इनके मेल से एक तीसरी बोली उत्पन्न हुई जिसका नाम अर्धमागधी पड़ा।

विशेषताएँ इसके निम्नलिखित विशेषताएं हैं —

① ष, श, स के स्थान पर 'स' मिलता है जैसे - शशि - ससि, श्रावक - सावग

② अनेक स्थलों पर दंत्य ध्वनियाँ मूर्धन्य हो गई है जैसे - स्थित - ठिय

Scanned with CamScanner

③ च वर्ग के स्थान पर कहीं कहीं त वर्ग मिलता है जैसे - चिकित्सा = तेइच्छा ।

④ इसमें 'र' और 'ल' दोनों होते हैं

⑤ इसमें क, का, ग होने की प्रवृत्ति भी पाया जाता है जैसे - एग - एगा ।

⑥ दो स्वरों के बीच आनेवाले असंयुक्त 'च' और 'ज' के स्थान में 'त' और 'य' दोनों ही होते थे नाराच = णाराय । कदाचित = कयाती ।

⑦ अनेक स्पर्श ध्वनि का लोप हो जाने पर य श्रुति आ जाती है जैसे सागर = सायर ।